चतुर्थ अध्याय

मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी के विविध रूप

विषय प्रवेश -

4.1 नारी के विविध रूप

4.1.1 पारिवारिक भूमिका के आधार पर नारी के रूप

4.1.1.1 माता -

विवश माँ

आर्थिक परिस्थिति के कारण बेबस माँ

बेटी के भविष्य के प्रति चिंतित माँ

असफल आदर्श माँ

बेटी के विवाह की चिंता करनेवाली माँ

4.1.1.2 पत्नी -

असफल आदर्श पत्नी

पति के लिए त्याग करनेवाली

पतिद्वारा पीड़ित पत्नी

पति के पसंद के अनुरूप खुद को बदलनेवाली

पति के प्रेम से वंचित

आधुनिक विचारोंवाली

4.1.1.3 बेटी -

माँ की मदद करनेवाली

माँ के प्रति विद्रोह करनेवाली

पिता के इच्छा के खिलाफ विद्रोह करनेवाली

4.1.1.4 बहू-रूप -

विवश बहू

ससुर के खिलाफ विद्रोह करनेवाली

4.1.1.5 सास-रूप -

बहू का साथ देनेवाली

आदर्श सास

4.1.1.6 प्रेमिका के रूप में -

समर्पित प्रेमिका

स्वार्थी प्रेमिका

4.1.2 नायिका के रूप में -

प्रेमी की तलाश करती नायिका

पुरानी यादों में खोयी नायिका

ग्लेशियर की सैर करनेवाली

असफल प्रेम करनेवाली

4.1.3 विभिन्न व्यवसायों में नारी रूप -

4.1.3.1 सहायक कमिशनर

4.1.3.2 अनुसंधाता

4.1.3.3 नौकरानी

4.1.3.4 हार्ट स्पेशालिस्ट / डाक्टर

4.1.3.5 लेक्चरर

4.1.3.6 चित्रकार

4.1.3.7 दाई

निष्कर्ष -

संदर्भ सूची

विषय प्रवेश -

समाज मानवी जीवन से बनता है और मानवी जीवन का उगमस्थान है नारी । 'नारी' शब्द कोमलता, मधुरता और ममता से भरा हुआ है । वह संतान को जन्म देकर उसका पालन-पोषण करती है, उसका विकास करती है, तभी तो परिवार में नारी का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है । नारी से ही परिवार बनता है और बिगड़ता भी है । वह चाहे अनपढ़ हो या शिक्षित, अपने परिवार को आदर्श बनाने में अपना जीवन समर्पित करती है । नारी को सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक माना जाता है । पुरुष और स्त्री का संबंध परस्पर पूरक माना जाता है । वह उसे हर कार्य में मदद करती है । वह अपने विविध रूपों में परिवार में या पुरुष के जीवन में तन-मन से सहाय करती आयी है । परिवार के साथ ही समाज में भी वह विशिष्ट स्थान निर्माण करती है । पुरुष के हर कार्य में स्त्री का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है । पुरुष उससे प्रेरणा पाकर संसार के कठिन-से-कठिन कार्यों में भी सफलता हासिल करता है । अत: नारी शक्ति सेवा उदारता, सहृदयता आदि अनेक उदात्त भावनाओं के समावेश से परिपूर्ण होती है । वह वात्सल्य, स्नेह, दया आदि गुणों से संपन्न है । ''पुरुष समाज का न्याय है, स्त्री दया; पुरुष प्रतिशोधमय क्रोध है, स्त्री क्षमा; पुरुष शुष्क कर्तव्य है, स्त्री सरस, सहानुभूति और पुरुष बल है, स्त्री हृदय की प्रेरणा ।''[1] पुरुष शिव है तो स्त्री शक्ति, शक्ति के बिना शिव 'शव' बन जाता है ।

वैदिक युग से नारी को देवी रूप माना जाता था, उसकी पूजा की जाती थी । सीता, पार्वती जैसे पौराणिक चरित्र इसके प्रमाण हैं । नारी पुरुषत्व का आधार है । बिना उसके पुरुष अपने जीवन में कमी महसूस करता है । परंतु मध्ययुग से नारी का जीवन संघर्षशील बन गया है ।

आधुनिक स्त्री और पुरुष अपनी-अपनी जगह पूर्ण व्यक्तित्व की खोज कर रहे हैं । इस खोज की प्रक्रिया में आधुनिक नारी के विविध रूप उभर रहे हैं । परम्परागत वर्जनाओं से जैसे-जैसे वह मुक्त हो रही है, नवीन समस्याओं का वह सामना कर रही है । आर्थिक स्वावलंबन और मानसिक स्वतंत्रता के कारण वह आत्मनिर्भर है, किन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि वह बिना पुरुष सम्पर्क के जीवन व्यतीत कर सकती है । पुरुष के साथ रहना यह उसकी अनिवार्य नियति है । इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए कई विपरीत स्थितियों का सामना करना पड़ता है । आधुनिक पुरुष स्त्री के प्रति अपने उत्तरदायित्व को पूर्णत: नहीं निभा रहा है । कम से कम आज तो नारी अपने घर के बाहर पूर्णतया सुरक्षित नहीं है । वह अपने व्यक्तित्व की सुरक्षा न कर सकने की मजबुरी में बाधाओं से समझौता कर लेती है । यह समर्पण परम्परागत श्रद्धाओं और भावनाओं से प्रेरित न होकर उसकी अनिवार्य मजबूरी का परिणाम है ।

पुराने संस्कारों और नई परिस्थिति के बीच नारी किस प्रकार पुरुष के अनेक टूटे संदर्भों के बीच अकेली हो जाती है, उसके मानसिक गठन में कैसे परिवर्तन आ जाते हैं, इसे आज की कहानी अधिक

वास्तविकता अनेक सूक्ष्म-संश्लिष्ट धरातलों और विविध संवेदनशील पक्षों को चित्रित करती है । जीवन के उतार-चढ़ाव से गुजरती हुई नारी की आज-कल दयनीय स्थिति हो रही है । उस को पारिवारिक सामाजिक, धार्मिक परिस्थिति के कारण अपना एक विशिष्ट प्रभाव डाल देती है । साथ ही अनेक रूपों में उजागर होती है ।

4.1 नारी के विविध रूप -

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण है । संसार में यदि नारी न होती, तो सभ्यता और संस्कृति ही न होती । अपने विविध रूपों में नारी ने पुरुष को संवर्धन, प्रोत्साहन और शक्ति दी है । वह समाज में पुरुष के लिए कभी जन्मदात्री, पोषणकर्त्री माता के रूप में आती है । अत: समाज में नारी के माता, पत्नी, भगिनी, पुत्री, सखी, सपत्नी, सेविका, परिचारिका, तपस्विनी आदि अनेकानेक रूप हैं । अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए उसे अनेक रूपों से गुजरना पड़ता है । "स्त्री के व्यक्तित्व में कोमलता और सहानुभूति के साथ साहस तथा विवेक का एक ऐसा सामंज्यस होना आवश्यक है जिससे . . . ऐसा एक भी सामाजिक प्राणी न मिलेगा जिसका जीवन माता, पत्नी, भगिनी, पुत्री आदि के किसी-न-किसी रूप से प्रभावित न हुआ हो ।"[2] माता, पत्नी, प्रेमिका, पुत्री, भगिनी आदि उसके अनेकानेक रूप हैं ।

शिक्षा के प्रभाव से नारी घर से बाहर कदम रखकर हर क्षेत्र में पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगी है । लेकिन समाज में उसे पुरुष के साथ चलते-चलते प्रकार अनेक की समस्याओं का सामना करना पड़ता है ।

नारी के बिना साहित्य भी अधूरा है । अत: साहित्यकारों ने साहित्य में नारी के विविध रूपों को दर्शाया है ।

अत: मैंने मृदुला गर्ग के 'शहर के नाम' तथा 'ग्लेशियर से' कहानीसंग्रहों में जो नारी के विविध रूप दिखाई देते हैं, उनकी ही अध्ययन की सुविधा के लिए सूची बनाई है ।

1. पारिवारिक भूमिका के आधार पर नारी के रूप -

माता

पत्नी

बेटी

बहू

सास

प्रेमिका

2. नायिका के रूप में
3. विभिन्न व्यवसायों में नारी -

सहायक कमिशनर

अनुसंधाता

नौकरानी

हार्ट स्पेशालिस्ट / डॉक्टर

लेक्चरर

चित्रकार

दाई

4.1.1 पारिवारिक भूमिका के आधार पर नारी के रूप -

परिवार में नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है । आज नारी व्यावहारिक जीवन को ही महत्त्वपूर्ण मानकर जीवनयापन करने लगी है । पुनर्जन्म अथवा 'सात जन्मों तक यही पति मिले' वाली बातों में उसकी आस्था समाप्त होने लगी है । इस आस्था को वह महज एक ढोंग तथा अपने प्रति किये जाने वाले शोषण का एक अंग मानने लगी है । अपना स्थान निभाने के लिए उसे कई पारिवारिक भूमिकाओं को साकार करना पड़ता है । उन भूमिकाओं को निभाने के लिए उसे अनेक परिस्थितियों का सामना पड़ता है, अपना कर्तव्य निभाना पड़ता है । नारी को अपने कर्तव्य के लिए अनेक रूपों से गुजरना पड़ता है, जैसे माता, पत्नी,प्रेयसी बहन पुत्री आदि ।

4.1.1.1 माता -

नारी के विभिन्न पारिवारिक भूमिका के रूपों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और गौरवाशाली रूप माता का है । दया, क्षमा, ममता, स्नेह, वात्सल्य का रूप है माँ । ममता से भरी करुणामयी, आदरणीय माँ के स्वभाव में धैर्य,त्याग सब गुण होते हैं । महादेवी वर्मा के मतानुसार - ''स्त्री के विकास की चरमसीमा उसके मातृत्व में हो सकती है ।''[3] पत्नी का रूप निभाते-निभाते उसे माता का भी कर्तव्य निभाना पड़ता है । ''पत्नी का पद पाकर नारी के व्यक्तित्व का विकास अवश्य होता है । पर उसके जीवन की सच्ची सार्थकता और पूर्णता तभी होती है जब वह माँ बनती है ।''[4] माँ अपने संतान को जन्म देकर उसका लालन-पालन करती है, उसका जीवन सँवारती है । एक माँ की यही कामना होती है कि उसकी संतान हमेशा जीवन में कामयाब रहे, सुखी रहे इसलिए वह बचपन से ही संतान पर अच्छे संस्कार करने की कोशिश करती है । खुद दु:ख सह लेती है, मगर अपने संतान को सुखी रखती है ।

मृदुला गर्ग की 'तुक','तीन किलो की छोरी' , 'चकरघिन्नी ' कहानियों में माँ के रूप का चित्रण हुआ है । इन कहानियों में माँ का रूप भी अलग-अलग विशेषताओं द्वारा उजागर हुआ है । इन कहानियों में बेटी की शादी की चिंता में डूबी माँ है, बेटे की माँग करती माँ है, बेटी को डॉक्टर बनाने के सपने देखनेवाली माँ है ।

- **विवश माँ -**

'तीन किलो की छोरी' कहानी दो नारियों का माँ के रूप में चित्रण किया है । दोनों भी अपनी-अपनी परिस्थितियों के कारण बहुत ही विवश हैं ।

पहली जो स्त्री है, जिसका नाम लल्लीबेन है, जो तीन किलो की तीसरी बार भी छोरी होने के कारण अपने नसीब को कोस रही है । बेटे के लिए वह बहुत-से देवी-देवताओं के व्रत करती है, मन्नते माँगती है, लेकिन फिर भी तीसरी बार बेटी ही पैदा होती है । जब यह बात उसकी सास मनुबेन सुनती है, तो अपनी बहू को वह खूब बुरी बातें सुनाती हैं । मन्नुबेन कहती है ''तीन किलो ! तीन किल्लो ! दूध है जो डीपो पर बेच आएँ ।''[5] बेटी को जन्म देने के तुरंत बाद उसे काम पर लग जाना पड़ता है, थोड़ा-सा भी विश्राम उसे नहीं मिलता । पति भी उसे गाली-गलौच करता है । घर में हर रोज कम से कम बारह किलो दूध होता है, लेकिन मनुबेन सारा का सारा दूध डीपो बिकने भेजती है । ना ही बच्ची के लिए वह दूध रखती है, ना ही शारदाबेन को बच्ची जनवाने का कुछ रुपया देती है । तभी बेबस, लल्लीबेन हिलककर रोने लगती है । रोती लल्लीबेन खटिया की बीनाई में से टटोलकर एक रुपये का नोट निकालकर दाई शारदाबेन को देती है । इस तरह विवश लल्लीबेन अपनी बेटी को ना ही दूध दे पाती है, ना ही उसके जन्म की खुशी वह मना पाती है । मृदुला गर्ग ने लल्लीबेन का एक विवश, बेबस, लाचार माँ के रूप में चित्रण किया है ।

- **आर्थिक परिस्थिति के कारण बेबस माँ -**

'तीन किलो की छोरी' इस कहानी में और एक बेबस माँ के रूप में नन्नीबेन का चित्रण पाया जाता है । लल्लीबेन के पड़ोस में रहनेवाली नन्नीबेन ने पिछले हफ्ते ही एक बेटे को जन्म दिया है । उसके घर में एक भैंस थी, लेकिन वह कर्जे पर ली थी, इसलिए घर में दूध होते हुए भी वह अपने बेटे को दूध नहीं पिला पाती । भैंस का चार हजार कर्ज चुकाना था, और चारा कम मिलने के कारण दूध भी कम देती थी । अत: सारा का सारा दूध बेचकर हर महिने किस्त चुकानी होती है । भैंस के दूध का जितना पैसा मिलता है, उसी पर खर्च हो जाता है । घर में हमेशा ही आर्थिक तंगी रहती है, इसलिए एक हफ्ते पहले जन्मे छोटे बच्चे को घर में रखकर नन्नीबेन को ट्रक पर खाद के बोरे लादने के काम पर जाना पड़ता

है । बिना दूध के बच्चा बीमार होता है और मर जाता है । अपनी मजबुरी को शारदाबेन के सामने स्पष्ट करते हुए नन्नीबेन कहती है - ''ये तो कल सारा दिन चारा काटते डोले । मैं काम पर गयी तो किलो भर बाजरा हुआ घर में । काम पर न जाऊँ तो क्या खिलाऊ मरद को और क्या पिलाऊ छोरे को ।''[6]

इस तरह मृदुला गर्ग ने लल्लीबेन औ नन्नीबेन दोनों माताओं का बेबस, लाचार चित्र कहानी में अंकित किया है ।

- **बेटी के भविष्य के प्रति चिंतित माँ -**

'चकरघिन्नी ' कहानी की लेखा हृदयरोग विशेषज्ञ है, साथ ही साथ वह एक बेटी की माँ है, जिसका नाम विनिता है । बचपन से ही लेखा ने अपने बेटी के भविष्य के बारे में कुछ सपने बुने थे । वह चाहती थी कि, उसकी बेटी भविष्य में उसकी तरह डॉक्टर बन जाए । लेखा जानती थी विनीता पढ़ाई-लिखाई में होशियार है, मेडिकल में दाखिला मिल जाएगा । इसलिए कभी-कभी वह पति से कहती थी - ''विनीता हार्ट स्पेशालिस्ट बन जाएगी तो तुम्हारे क्लिनिक का क्या होगा, विदुषक ? हमें एक बच्चा और पैदा करना चाहिए।''[7] इसलिए मेडिकल की परीक्षा का फार्म जब लेखा लाकर विनीता के सामने रख देती है तब उसे पता चलता है कि विनीता डॉक्टर नहीं, बल्कि बी.ए. करना चाहती है और शादी करके एक अच्छी पत्नी बनना चाहती है । यह बात सुनकर लेखा को बहुत दु:ख होता है ।

लेखा विनीता के भविष्य की चिंता करती है, लेकिन विनीता को अपनी माँ की इच्छा का जरा भी ख़याल नहीं था । यह देखकर लेखा बहुत दु:खी होती है ।

- **असफल आदर्श माँ -**

मृदुला गर्ग ने 'चकरघिन्नी ' कहानी में विनीता को भी एक माँ के रूप चित्रित किया है । फिल्मों में, किताबों में जो आदर्श माँ की छबि मिलती है, वह विनीता की माँ की तस्वीर से भिन्न थी । विनीता अपनी माँ को आदर्श माँ नहीं मानती थी, अत: वह खुद एक आदर्श माँ बनने की कोशिश करती है, लेकिन हार जाती है । उसे माया, और अजय दो संताने हैं । विनीता अपना सारा समय पति और अजय तथा माया की देखभाल करने में ही गुजारा करती है । समय-समय पर वह दोनों बच्चों का डॉक्टरी मुआयना कराने के लिए अपने बाल विशेषज्ञ पिता के पास ले जाती थी । आदर्श माँ की तरह माया को स्कूल भेजने तथा अजय को अपने हाथ से दूध पिलाने के जिम्मेदारी वह बखूबी निभाती थी । बढ़ती उम्र के बच्चों को पौष्टिक आहार देना जरुरी था । इस तरह का आहार बनाकर अपने बच्चों को वह खिलाती थी । स्कूल से लौटने पर वह बच्चों को जमकर पढ़ाती थी ।

एक दिन शाम विनीता माया को खाने की मेज पर कॉमिक पढ़ने के लिए मना करती है । लेकिन माया अपनी माँ की बात नहीं मानती और कॉमिक पढ़ती रहती है । शाम को अजय बाहर जाने लगता है तो आदतन विनीता के मुँह से निकल जाता है, ''पूरी बाँहों का स्वेटर पहनकर जाओ ।''[8] अजय विनीता की बात मानने की बजाय उसे ही उल्टा जवाब देता है और चला जाता है । इन दोनों के इस बर्ताव से विनीता अपने आप को आदर्श माँ बनने में असफल मानने लगती है । वह जी-तोड़ कोशिश करती है कि वह आदर्श माँ बन जाए, लेकिन अंत में इस कोशिश में वह असफल हो जाती है ।

- **बेटी के विवाह की चिंता करनेवाली माँ -**

'खरीदार' कहानी की नायिका नीना एक पढ़ी-लिखी लड़की है, लेकिन दिखने में खुबसूरत नहीं है । इसलिए नीना की माँ को अपनी बेटी की शादी की चिंता सता रही है । नीना के लिए एक रिश्ता आया था, जो लोग बीस हजार रुपये लेकर शादी के लिए तैयार हो जाते हैं । लेकिन नीना दहेज देकर शादी नहीं करना चाहती, इस शादी से वह साफ इनकार कर देती है । तब उसकी माँ उसे समझाती है - ''यह तो दुनिया का कायदा है । पहले-पहल लड़की की सुरत देखी जाती है और लड़के की कमाई । बाद में सब ठीक हो जाता है । तेरी तरह जिद करती तो आधी लड़कियाँ कुंआरी ही रह जाती ।''[9] इस तरह नीना की माँ चाहती है, कि किसी भी तरह नीना की शादी हो जाए । इसी चिंता में वह डुबी है ।

इस तरह अपनी कहानियों में मृदुला गर्ग ने माँ के विविध रूपों का चित्रण किया है ।

4.1.1.2 पत्नी -

भारतीय परिवार में नारी का पत्नी रूप भी विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है । सिर्फ परिवार ही नहीं बल्कि समस्त विश्व की सुख शांति की वह अधिष्ठाती है । उसके ही आँचल में मानवता की परवरिश होती है । वह अपनी ममता, समता, उदारता और त्याग आदि कोमल भावनाओं का सजगता से मानव को विश्वबंधुत्व का पाठ पढ़ा सकती है । उसके संबंध में डॉ. वल्लभदास तिवारी लिखते हैं - ''गृहिणी सचिवः, सखी मित्रः, प्रियशिष्या ललिते कलाविध्यो ॥''[10] अर्थात पत्नी गृहिणी, गृहकार्य में सखी, एकांत में मित्र और ललित कलाओं में प्रियशिष्या होती है ।

नारी के पारिवारिक संबंधों में पति-पत्नी का संबंध सबसे महत्त्वपूर्ण है । मानव-सभ्यता के आदि काल से पत्नी के धर्म और मर्यादा का महत्व स्वीकार किया गया है । ''पतिव्रत पत्नी का परम-धर्म माना गया है । तन-मन वचन से पतिपरायणता नारी का आदर्श रूप है । वह पति की शक्ति है । अपनी योग्यता, कुशलता और सेवा से दाम्पत्य जीवन को निरन्तर सुचारु रूप से चलाना पत्नी का धर्म है । पति चाहे अपने कर्तव्य से विमुख हो जाय, चला जाय पर पत्नी अपने कर्तव्य से कभी विमुख नहीं होती, यही उसका सनातन आदर्श है ।''[11]

नारी अपने पति के सुख-दुख, आशा-निराशा, आचार-विचार और महत्वाकांक्षाओं को अपना कर ही सहचारिणी बनती है । विपत्ति में धीरज बंधाती है और परिश्रम में उसका पूरा-पूरा खयाल रखती है । पति के विचारों को, मन:स्थिति को समझना और स्वयं को उसके अनुरूप ढालना उसका कर्तव्य है । हर हालत में पति के साथ परछाई की तरह रहकर वह अपना कर्तव्य निभाती है ।

मृदुला गर्ग की कहानियों में भी ऐसे अनेक नारी पात्र हैं, जो परिवार के लिए, अपने पति के लिए अपना सुख त्याग कर उसके साथ रहने में, उसके सुख में अपना सुख मानने वाली पत्नी के रूप में चित्रण किया गया है । मृदुला गर्ग की अधिकांश कहानियों के नारी पात्रों की विशेषता यह है कि उनकी नायिकाएँ मध्यवर्गीय समाज और मान्यताओं में पली साधारण घरेलू, पढ़ी-लिखी नारियाँ हैं । गृहस्थी के दायित्वों एवं पति तथा परिवार की नैतिक अवस्थाओं को भी स्वीकार करनेवाली हैं ।

- **असफल आदर्श पत्नी -**

'चकरघिन्नी ' कहानी की नायिका विनीता अमित की पत्नी है, जो सेण्ट्रल बैंक में मैनेजर थे । विनीता अपने पति की हर इच्छा पूरी करती थी । उसके हर दिन तथा हर हफ्ते का कार्यक्रम अमित पहले से ही तै कर लेता था और उसी के अनुसार विनीता का सारा काम चलता था । जब अमित के बदन पर चर्बी चढ़ती है, तब पति की चर्बी घटाने के लिए सुबह की सैर अपनी दिनचर्या में शामिल कर लेती है । अपने डॉक्टर पापा के कहने पर उसने चर्बी घटाने में चुफीद खाना भी बनाना शुरू कर दिया था । लेकिन फिर भी अमित विनीता को बतलाता है कि उसके पापा के असिस्टेण्ट के पति के शरीर की गठन देखकर सब रश्क करते है । अमित कहता है ''तुम उसकी बीवी से सन्तुलित खुराक के बारे में पूछो न, पता नहीं क्या खिलाती है उसे ?''[12]

अमित और बच्चों की बातों से विनीता अपने पापा के क्लीनिक में सुबह की शिफ्ट के लिए रिसेप्शनिस्ट के रूप में काम करने के लिए तैयार होती है । लेकिन पति अमित चाहता है कि शाम की शिफ्ट के लिए वह काम करें । विनीता इस बात के लिए भी तैयार हो जाती है । इस तरह विनीता एक आदर्श पत्नी बनने का भरसक प्रयास करती है, लेकिन असफल हो जाती है ।

- **पति के लिए त्याग करनेवाली -**

'वह मैं ही थी' कहानी में उमा को भी पत्नी के रूप में चित्रित किया है । उमा के माता-पिता दिल्ली में रहते है । उमा एक पढ़ी-लिखी लड़की है । शादी से पहले वह कॉलेज में अर्थशास्त्र पढ़ाया करती थी । लेकिन जब उमा की शादी मनीश से होती है, तो उसके तबादले के बाद वह बिहार के एक छोटे से कस्बे में रहने लगती है । उस वक्त उमा गर्भवती थी । कारखाने में उड़नेवाला सिमेण्ट हवा को भारी बना देता है । इससे उमा को साँस लेने में तकलीफ होती थी । इस कस्बे में अस्पताल या डॉक्टर की सुविधा नहीं थी । इस कारण वहाँ आनेवाली अफसर की बीवी उमा से कहती, ''बच्चा यहाँ मत होने

दो । यहाँ की दाई दस बच्चे करवाती है, तो सात माँएँ मर जाती हैं । मेरे दोनों बच्चे शहर में हुए माँ के घर । तुम अपनी माँ के पास दिल्ली क्यों नहीं चली जाती ?''[13] लेकिन उमा उनकी व्यस्त सामाजिक जिंदगी की रफ्तार में रुकावट पैदा नहीं करना चाहती थी । वह चाहती थी, कि पटना के किसी अस्पताल में दस-पंद्रह दिन रहे, लेकिन उसके पास पैसे नहीं थे । मनीश के पास इतना पैसा नहीं था कि उसे हफ्ते-दो हफ्ते सस्ते-से-सस्ते होटल में भी ठहरवा सके । पति की मजबुरी देखकर उमा उसी कस्बे में रहकर अपनी बच्ची को जन्म देती है, लेकिन उसमें उमा के प्राण चले जाते हैं ।

- **पतिद्वारा पीड़ित पत्नी -**

'रेशम' कहानी की हेमवती अपने पतिद्वारा पीड़ित नारी है । हेमवती को दो बेटे हैं, एक रामू और दूसरा राजू । उनकी शादियाँ हो चुकी हैं, घर में बहुएँ आ गयी हैं । बचपन में राजू क्रिकेट के बल्ले के लिए हफ्तों-भर रोता रहा, लेकिन बाऊजी ने बल्ला नहीं दिया । आखिर उसके रोने-झींकने से परेशान होकर उन्होंने अपने पास के पैसों से उसे बल्ला खरीद दिया था । तभी से बाऊजी ने उन्हें एकमुश्त घर का खर्च देना बन्द कर दिया था । आज भी अपने बेटों और बहुएँ के सामने हेमवती को हमेशा अपमानित करते रहते थे । हर दिनभर के खर्च को हिसाब लगाकर पैसे पकड़ाते थे । तब हेमवती ऐसा महसूस करती - ''हर सुबह हाथ फैलाकर दस-बीस रुपये लेने में वे भिखारिन-सा महसूस करती थीं। तमाम दिन पैसे-पैसे की गिनती करते बीतती थीं । शाम तक, हाथ खाली होने पर, वही भिखमंगापन दूनी ताकत के साथ उन पर हावी हो जाता था ।''[14] बहुएँ हेमवती को समझाती हैं, कि इस तरह बाऊजी के सामने पैसों के लिए हाथ फैलाकर अपने को अपमानित ना करे । लेकिन फिर भी हेमवती अपने पति के बर्ताव की शिकायत नहीं करती । बहुओं के सामने अपने पति का ही पक्ष लेती रहती है ।

- **पति की पसंद के अनुरूप खुद को बदलनेवाली -**

'तुक' कहानी की नायिका मीरा अपने पति से बहुत प्यार करती है । मीरा का पति नरेश स्टेट बैंक में चीफ अकाउण्टैण्ट का काम करता है । मीरा हमेशा अपने पति के इच्छा के अनुसार अपने आप को बदलने की कोशिश करती है । इसलिए वह कहती है, ''उसके साथ ही मैं यह भी समझ गयी हूं कि पति की खुशी-नाखुशी, आकर्षण-विकर्षण, या रूचि-उदासीनता जैसे मेरे लिए जिंदगी और मौत का सवाल बन जाती है ।''[15] इससे पता चलता है, कि मीरा अपने पति से बहुत प्यार करती है । मीरा नरेश की इच्छा पर गाडी चलाना सीख लेती है । नरेश शाम को दफ्तर से लौटने पर ब्रीज खेलने जाता था । नरेश चाहता है कि, मीरा भी ब्रीज खेलना सीख जाए । मीरा ब्रीज सीखने की बहुत कोशिश करती है, लेकिन हार जाती है । जब भी नरेश ब्रीज के खेल में हार जाता है, तो उसका सारा गुस्सा वह मीरा के शरीर पर

उतारता है । लेकिन फिर भी मीरा ने कभी उसके इस बर्ताव पर क्रोध प्रकट नहीं किया । उसके हर अत्याचार को वह चुपचाप सह लेती है ।

- **पति के प्रेम से वंचित पत्नी -**

'अदृश्य' कहानी की वीना देवेन की पत्नी है, जो एक डॉक्टर है । आजकल अक्सर वह भूल जाया करता है, कि उसके घर में एक स्त्री रहती है, जो उसकी पत्नी है । दिन के चौबीस घण्टों में से कम से कम बारह, वह क्लिनिक में गुजारता है और तीन-चार घण्टे बाहर आने-जाने में। बाकी के आठ-नौ घण्टे वह घर में बिताता जरुर है, पर उसमें से छह घण्टे सोने में निकल जाते हैं और बाकी आम दिनचर्या में । उस दौरान वीना से उसका सामना कई बार होता है । लेकिन फिर भी उसे तो यह तक महसूस नहीं हो पाता कि उसके घर में कोई स्त्री भी रहती है । क्योंकि वीना को छोड़ वह अपर्णा से प्रेम करता है और उसके साथ शारीरिक संबंध रखता है । आजकल वह पूरी तरह वीना को भूल चुका था । यह इस बात से स्पष्ट दिखाई देता है, ''अगर वीना स्त्री न होकर एक मशीन होती जो खाना बनाकर मेज पर रख देती, झाड़ू देकर घर की सफाई कर लेती, चादर बिछाकर बिस्तर तैयार कर देती, उसके कपडे धुलवाकर आलमारी में टांग देती, तो वह ठीक इसी तरह उसे नजरअंदाज करता ।''[16]

देवेन वीना को इतना भूल चुका है, उसके सामने दो-तीन आदमी आकर रात के अंधेरे में वीना पर चाकू से वार कर घायल कर देते हैं । उसी में उसकी मृत्यु हो जाती हैं । लेकिन तब तक उसे मालूम नहीं था कि उसके सामने जो मरीज है, वह उसकी पत्नी वीना है । इस तरह वीना अपने पति के प्यार से वंचित अंत में मर जाती है ।

- **आधुनिक विचारोवाली पत्नी -**

'खाली' कहानी में जो औरत है, वह पढ़ी-लिखी और आधुनिक विचारोंवाली है, जो नौकरी करती है । उसकी शादी को पाँच साल हो गए , लेकिन उसे अबतक संतान नहीं थी । क्योंकि वह नहीं चाहती कि उसका बच्चा किसी और के सहारे पले । इसलिए वह निर्मला से कहती है, ''जब पैदा करूगी तो पालूंगी भी खुद ही । पालने को मन है, इसलिए पैदा करुंगी न । न हुआ तो दफ्तर छोड़-छाड़कर अलग करुंगी ।''[17]

पति-पत्नी दोनों भी नौकरी करते हैं, इसलिए घर के सभी कामों में वह दोनों का सहभाग होना जरुरी समझती है । इसलिए जब नए मकान में सामान शिफ्ट करती है, तो उसका पति दिनेश इस काम में हाथ नही बंटाता, तब वह चाहती है कि रात का खाना दिनेश बनाये । इसलिए रात का खाना भेजने से मना करते हुए वह निर्मला से कहती है, ''ऐसा करेंगी, तो सारा मजा ही किरकिरा हो जायेगा । मैंने तो

तय कर रखा है कि आज रात का खाना दिनेश बनायेंगे । मकान शिफ्ट करने में जरा मदद नहीं की बच्चू ने ।''[18]

विवेच्य कहानीसंग्रहों में मृदुला गर्ग ने पत्नी के विविध रूपों का चित्रण किया है ।

4.1.1.3 बेटी रूप में नारी -

नारी के सभी रूपों में बेटी रूप बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है । क्योंकि बेटी सिर्फ पिता के घर को ही नहीं, तो पति के घर को भी रोशन करने का काम करती है । बेटी दो घरों को जोड़ने का काम करती है । जिस घर में वह पैदा होती है, खेलती है, बड़ी होती है उस घर को छोड़कर वह एक नए घर में, नए लोगों के बीच चली जाती है, उन्हें अपनाती है । अत: नारी का यह बेटी रूप बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है । नारी के इस महत्त्वपूर्ण रूप को मृदुला गर्ग की कुछ ही कहानियों में स्थान मिला है ।

- **माँ की मदद करनेवाली -**

'अनाडी' कहानी की सुवर्णा एक निम्नवर्गीय परिवार की बेटी है । आठ बरस की थी, तब उसके बप्पा का काम छूट गया था । इसलिए उसकी माँ अधिक घरों में झाडू-फटके का काम करने लगी। तब सुवर्णा स्कूल की पढ़ाई छोड़कर अपनी माँ के साथ उन्हीं घरों में बर्तन मलने का काम करती है । इतनी छोटी-सी उम्र में घर की हालत देखकर माँ को मदद करने के लिए, घर चलाने के लिए अपने बचपन की सारी खुशियाँ छोड़कर नौकरानी का काम करती है । अब उसकी उम्र बारह साल है । जिस घर में वह काम करती है, वहाँ का सेठ सुवर्णा को देखकर कहता है, ''इतनी छोटी लड़की को काम नई ना करना चाहिए ।''[19] सुवर्णा को इस तरह की किसी से भी झूठी हमदर्दी नहीं चाहिए थी। इस तरह मृदुला गर्ग ने इस कहानी में सुवर्णा को एक आदर्श एवं समझदार बेटी के रूप में चित्रित किया है ।

- **माँ के प्रति विद्रोह करनेवाली बेटी -**

'चकरघिन्नी ' कहानी में विनीता को एक बेटी के रूप में चित्रित किया है । विनीता के माता-पिता डॉक्टर थे । अत: विनीता की माँ लेखा चाहती थी कि, विनीता भी पढ़-लिखकर डॉक्टर बने । लेकिन विनीता नहीं चाहती थी कि, वह माँ की तरह डॉक्टर बने। वह चाहती थी, शादी करके वह आदर्श माँ और पत्नी बने । विनीता अपनी माँ को एक आदर्श माँ नहीं मानती थी । उसकी सहेलियों की माँ-दादी जिस छबि का वक्त-बेवक्त बखान करती थीं, वह उसकी माँ की नहीं थी । डॉक्टर पेशे के कारण लेखा विनीता को अधिक समय नहीं दे पाती थी । अत: विनीता को लगता है कि अगर वह भी डॉक्टर बनी तो आदर्श माँ और पत्नी नहीं बन पाएगी । इसलिए वह माँ से कहती है, ''जी हाँ । मैं सिर्फ इसलिए डॉक्टर नहीं बन सकती क्योंकि आप चाहती हैं । आपने कभी यह जानने की कोशिश की है, मैं क्या चाहती हूँ, क्या पढ़ती हूँ, क्या करती हूँ, जिंदगी में मेरी ख्वाहिशें क्या हैं ?''[20] अंत में विनीता माँ के

फैसले के खिलाफ विद्रोह करती है और अंत में बी.ए. के बाद शादी कर लेती है । इस कहानी में विनीता के माध्यम से बेटी का विद्रोही रूप चित्रित किया है ।

- **पिता के इच्छा के खिलाफ विद्रोह करनेवाली बेटी -**

'शहर के नाम' कहानी की 'मैं' एक कम उम्र लड़की है । उसके पिता एक सरकारी अफसर हैं । उन्हें अपनी बेटी का पढ़ाई छोड़कर मजदूरों की झुग्गी-झोंपड़ी, बस्तियों में, गली-गली जाकर नाटक करना पसंद नहीं था । वह चाहते थे कि उनकी बेटी अमरिका में रहकर एम.एस. की पढ़ाई करें । इसलिए उसे वह अमरीका भेजते हैं । लेकिन 'मैं' को पढ़ाई की अपेक्षा शादी, बच्चे, दोस्त इनमें ही अधिक रूचि होती है । अमरीका जाकर वह अपनी पढ़ाई के प्रति समर्पित नहीं रहती और वहाँ के सामाजिक जीवन से जुड़ जाती है । बार-बार उसके मन में अपने देश लौट आने की तीव्र इच्छा निर्माण होती है । इसलिए पिताजी से वह वापस आने के लिए रुपयों की माँग करती है । लेकिन पिताजी उसे पढ़ाई अधूरी छोड़कर अपने देश वापस आने नहीं देना चाहते थे । इसलिए खत लिखकर उसे कहते है, ''तुर्रा यह कि पैसे मैं भेजूँ क्यों ? किसलिए ? कमा लो खुद । झाडू लगाओ, बर्तन रगड़ों, तुम्हारी जिंदगी है, जियो । पर इतना याद रखो कि डिग्री लिये बगैर वापस लौटी तो हमारा-तुम्हारा कोई रिश्ता नहीं रहेगा । फिलहाल मैंने तय किया है कि तुम्हारी फीस मैं सीधा तुम्हारे कॉलेज में जमा करवाऊँगा । उसके अलावा जेब-खर्च नहीं भेजूँगा ।''[21]

लेकिन फिर भी 'मैं' छोटे-छोटे ढाबों में प्लेटें साफ करने का काम करके पैसे जमा करती है और अपने देश लौट आती है । देश वापस आने के बाद भी वह अपने शहर, अपने घर लौटकर नहीं जाती । बल्कि एक होटल में रुकती है ।

इस तरह बेटी के दो रूपों को अपनी कहानियों में मृदुला गर्ग ने चित्रित किया है । एक माँ-बाप के लिए पढ़ाई छोड़कर कम उम्र में ही काम करनेवाली बेटी और दूसरी माँ-बाप की इच्छा कि विरुद्ध पढ़ाई छोड़कर शादी करनेवाली बेटी ।

4.1.1.4 बहू रूप -

जब लड़की की शादी हो जाती है, तो वह जिस घर में जाती है, उस घर की बहू बन जाती है । एक बहू के रूप में ससुराल में उसे बहुत-सी जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं । सास-ससुर, पति, घर के अन्य लोग इन सभी का खयाल रखना पड़ता है । सास-ससुर की बहु से सबसे पहली इच्छा यह होती है कि वह उन्हें पोते-पोतियों का मुँह दिखाए । लेकिन कुछ बहुओं के नसीब में सास-ससुर की यह इच्छा पूरी करने की क्षमता नहीं होती । तब उन्हें सबके सामने विवश होना पड़ता है । इस वक्त बहू और घर के सभी लोगों में प्रेमपूर्ण बर्ताव होना जरुरी होता है ।

- **विवश बहू -**

'बाहरीजन' कहानी की नंदिनी, सरिता और राजेश्वर की बहू है । उनके बेटे नितीन की वह पत्नी है । उनकी शादी को सात साल हो गए हैं, लेकिन अब तक नंदिनी को संतान नहीं हो पायी । लेकिन उसके ससुर राजेश्वर चाहते हैं, कि जल्द-से-जल्द नंदिनी को बच्चा हो । इसलिए वह नंदिनी को ऑपरेशन करवाने के लिए राजी करना चाहते हैं । लेकिन डॉक्टर ने कहा था, एक साल और इंतजार करो । इसलिए नंदिनी चाहती है, कि बच्चे के लिए वह एक साल और इंतजार करें । सास सरिता भी नहीं चाहती कि नंदिनी ऑपरेशन करें । लेकिन अपने पति के सामने वह कुछ कह नहीं पाती । नंदिनी अपने सास-ससुर की इज्जत करती है, उनके सामने वह सिर झुकाकर ही बात करती है । इसलिए वह अपने ससुर के सामने विवश हो जाती है । अंत में वह अपनी सास सरिता से बच्चे के बारे में राय पूछ लेती है, ''आप क्या कहती हैं ? मुझे क्या करना चाहिए ? एक साल रुकी रहूँ ? बाद में . . . हम बच्चा गोद भी ले सकते हैं । क्यों, बतलाइए न ?''[22] नंदिनी आजकल की बहुओं की तरह मनमानी नहीं करती, बल्कि सास-ससुर को उचित मान-सम्मान वह देती है । इस कारण सास-ससुर के सामने वह अपने को विवश पाती है ।

- **ससुर के खिलाफ विद्रोह करनेवाली -**

'रेशम' कहानी की तारा और प्रीति हेमवती की दो बहुएँ हैं । इस कहानी में सास-बहू संबंध बहुत-ही प्रेमपूर्ण है, लेकिन ससुर जी का व्यवहार उन्हें अच्छा नहीं लगता । दोनों बहुएँ पढ़ी-लिखी हैं । इसलिए उन्हें अपनी सास का हररोज पति से अपमानित होना अच्छा नहीं लगता । ससुर के सामने हर वक्त वह दोनों सास का साथ देती हैं । तारा जब देखती है, कि उसके ससुर के सामने सास हेमवती को हर दिन घर खर्च के लिए पैसे माँगने के लिए हाथ फैलाने पड़ते हैं तब शाम को बाबजी के घर लौटने पर उनसे पूछती है कि वे महीने का खर्चा एक साथ माताजी को क्यों नहीं देते ।

प्रीति वकील की बेटी थीं और कानून की कायल । अत: वह चाहती है कि उसके ससुर, सास हेमवती के नाम पर कुछ रुपया बैंक में जमा करें । साथ ही मकान तक के कानूनन तीन हिस्से हो । प्रीति को लगता है कि हेमवती खुद अपने को पायदान बनाती है, इसलिए वह कहती है, ''सारा कसूर आपका है, माताजी । पायदान बनेंगी तो पायदान बनाएगा आदमी । साफ-साफ कह क्यों नहीं देतीं, इतनी कंजूसी करनी है तो खुद चलाओ गृहस्थी ।''[23] इस तरह दोनों बहुएँ अपनी सास के प्रति अच्छा बर्ताव रखती हैं । इसलिए ससुर की मृत्यु पर तारा सास को बढ़िया रेशम की साड़ी ले आती हैं ।

इस तरह मृदुला गर्ग ने इन दो कहानियों में बहू के आदर्श रूपों को चित्रित किया है ।

4.1.1.5 सास रूप -

परंपरागत रूप से भारतीय परिवार में सास-बहू का संबंध कलहपूर्ण-कडवाहट से युक्त एवं कठोर माना गया है । यह सिलसिला आजीवन चलता रहता है । सासद्वारा पीड़ित बहू सास बनने पर उसी पीड़ामय चक्र को परिचालित करती है । पर इसका यह तात्पर्य नहीं कि प्रत्येक सास अपनी बहू को पीड़ित ही करती रहती है । इसके विपरीत कुछ सासें ऐसी भी होती हैं, जो अपनी बहू को अपनी बेटी मानकर स्नेह की वृष्टि करती हैं । दोनों में प्रेमपूर्ण, अपनेपन का रिश्ता होता है । मृदुला गर्ग की 'रेशम' और 'बाहरीजन' इन कहानियों में इसी तरह के सास-रूप का चित्रण किया है ।

- **बहू का साथ देनेवाली -**

'बाहरीजन' कहानी की सरिता अपनी बहू नंदिनी को सात साल के बाद भी जब संतान नहीं होती, तो उसे भला-बुरा नहीं कहती, उसे नहीं कोसती । लेकिन उसके पति राजेश्वर बहू नंदिनी पर दबाव डालते हैं, कि वह ऑपरेशन करवा ले । जब राजेश्वर दोनों पर बहुत बरस पड़ते हैं, तब मन-ही-मन में सरिता विचार करती है, "क्यों इतना चीख-चिल्ला रहे हैं बेचारी लड़की पर । न हुआ बच्चा, न सही, गोद ले लेगी । क्या इतना भी अधिकार नहीं है उसे ।"[24] इस तरह सरिता आज की सास की तरह नंदिनी पर कभी अत्याचार नहीं करती, कभी उसे संतान न होने पर गाली-गलौच नहीं करती । एक औरत के रूप में वह नंदिनी की मजबूरी को अच्छी तरह समझ लेती है और पति के सामने नंदिनी का ही पक्ष लेती है । इस तरह कहानी में सरिता और नंदिनी के बीच प्रेमपूर्ण, स्नेहभरा संबंध दिखाई देता है ।

- **आदर्श सास -**

'रेशम' कहानी की हेमवती प्रीति और तारा दो बहुओं की सास है । हेमवती की दोनों बहुएँ पढ़ी-लिखी और समझदार हैं । प्रीति एक वकील की बेटी है । दोनों बेटे हर महीने की पहली तारीख को पूरी तनख्वाह लाकर अपनी पत्नी के हाथ में देते हैं । लेकिन हेमवती ने कभी भी अपने बेटे बहुओं के सामने इस बात की शिकायत नहीं की । हेमवती हर दिन के घर खर्च के लिए अपने पति के सामने पैसे के लिए हाथ फैलाती है, लेकिन कभी-भी बहुओं के सामने हाथ नहीं फैलाती । बहू तारा उससे कहती है, कि वह घर में खर्च ना करे, क्योंकि उसके पास पैसे होते हैं । वह घर खर्च देख लेगी । फिर भी हेमवती उससे पैसे नहीं लेती । प्रीति भी ससुर के मकान में सास को बराबर का हिस्सा दिलवाना चाहती है । तीनों भी समझदार होने के कारण इनमें कभी सास-बहू का झगड़ा नहीं होता । तीनों के बीच बहुत ही अच्छा, स्नेहपूर्ण, प्रेमपूर्ण वातावरण हैं ।

4.1.1.6 प्रेमिका के रूप में -

स्त्री-पुरुष का एक-दूसरे के प्रति आकर्षण निर्माण एक प्राकृतिक सत्य है । आदिकाल से नर-नारी के संबंधों में प्रेमतत्व को प्राकृतिक मानकर स्वीकारा गया है । नारी अपने प्रेमिका रूप में पुरुष के जीवन में सुख, आशा, खुशियाँ लेकर आती हैं । वह पुरुष की प्रेरक शक्ति बनती है । आधुनिक काल में शिक्षा व्यवस्था, दूरदर्शन आदि के प्रभाव से इसका विकास होता जा रहा है । यह कभी सफल बनता है, कभी असफल । प्रेमी को पाने के लिए उसे बहुत सारी, समस्याओं का सामना करना पड़ता है । समाज से संघर्ष करना पड़ता है । संघर्ष करते समय उसे हारना पड़ता है, तो कभी उसकी जीत होती है । हार-जीत के इस संघर्ष पर उसे पिता या प्रेमी दोनों में से एक को चुनना पड़ता है । अपनी खुशी के लिए परिवार की खुशी को त्यागना पड़ता है या फिर परिवार के लिए अपना जीवन दाँव पर लगा देना पड़ता है । ऐसा नहीं है कि शादी से पहले ही प्रेम किया जाता है । कुछ नारियाँ ऐसी होती हैं, जो शादी के बाद भी प्रेम करती हैं, या अपने पुराने प्रेमी से संबंध रखती हैं । इस तरह प्रेमिकाओं का चित्रण मृदुला गर्ग ने अपनी कहानियों में किया है ।

- **समर्पित प्रेमिका -**

'होना' कहानी की 'वह' कालेज में पढ़ाने का काम करती है । वह शादीशुदा है, लेकिन फिर भी वह पति के होते हुए अपने प्रेमी से संबंध बनाए रखती है । वह दोनों एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं । आज भी वह एक-दूसरे को खत लिखकर अपने प्रेम का अहसास जिंदा रखने का प्रयास करते हैं । उन दोनों का जिंदा होना, एक-दूसरे के जिंदा रहने का साधन है । इसलिए तो वह अपने प्रेमी से कहती है, ''मुझे खबर करवा देना । फौरन । तुम्हारा होना और तुम्हारा न होना, यही तो फर्क होगा, जीने और मरने में ।''[25] अपने मरने की खबर पहुँचाने के लिए उसका प्रेमी अपनी वसीयत में उसके नाम कोई छोटी-मोटी चीज-किताब या चित्र-छोड़ जायेगा । वह भी मान गयी थी । अगले ही दिन अपनी वसीयत बना डाली थी । हालांकि वसीयत में छोड़ने लायक उसके पास, कुछ था नहीं । जो कुछ था उसके पति का था उसका नहीं । फिर भी, उसने एक सीधी-सी वसीयत बना डाली थी । अपना सब कुछ पति के नाम छोड़ते हुए, एक किताब उसके नाम छोड़ दी थी, उसका नाम और पता देकर । इस तरह उन दोनों में विवाहोत्तर प्रेम दिखाई देता है ।

- **स्वार्थी प्रेमिका -**

'अदृश्य' कहानी की अपर्णा डॉक्टर देवेन से प्यार करती है, जो एक शादी-शुदा पुरुष है । अपर्णा को देवेन ने एक फ्लैट दिलवा दिया था । अब खाने की मेज और सोने के लिए विस्तर के बीच मंडराती देवेन की जिंदगी दो घरों में बंट गई थी और अब बिस्तर पर उसे एक स्त्री नजर आने लगी थी,

जिसका नाम अपर्णा था और जो उसकी रक्षिता थी । अपर्णा चाहती है, कि देवेन अपनी पत्नी वीणा को तलाक दे और उससे शादी कर ले । देवेन से वह कहती है, ''नहीं, तुम नहीं जानते । मैं तुम्हारे बिना कुछ नहीं हूं । तुम्हारे बगैर मैं जिंदा नहीं रह सकती । तुम मुझसे शादी कर लो । अपनी पत्नी को तलाक दे दो ।''[26] लेकिन देवेन इस बात के लिए राजी नहीं होता । अपर्णा जब देवेन के बच्चे की माँ बननेवाली थी, तब फिर एक बार वह उसे वीणा को तलाक देने की माँग करती है । लेकिन देवेन उसे कहता है, कि मैं तुम्हे सब कुछ दूंगा । पैसा, नौकर-चाकर, बड़ा घर । लेकिन तुमसे वीणा के रहते शादी नहीं कर सकता । अपर्णा जान जाती है कि वीणा के होते हुए वह देवेन को पति के रूप में नहीं पा सकती । वह देवेन के प्यार में इतनी पागल हो चुकी है, कि उसे पाने के लिए तीन आदमियों को भेजकर वह वीणा का खून करवाती है । इस तरह अपर्णा देवेन के प्यार में स्वार्थी हो चुकी है ।

4.1.2 नायिका के रूप में -

नायिका नायक की पत्नी, माँ, प्रेमिका ही हो ऐसा अनिवार्य नहीं होता । नारी पात्रों में ऐसी भी नारियाँ हैं, जो कथानक का नेतृत्व करती हैं । कथानक का अंत उस पात्र से ही होता है । अपने तरीके से वह अपना जीवन जीना चाहती है, मगर ऐसा वह नहीं कर पाती । जीवन की दिशा खुद चुनती है । मगर कभी उसकी हार, होती है तो कभी जीत । अपनी मंजिल ढूँढ़ना चाहती है । अपना फैसला पिता या अभिभावक पर सौंप देती है । कर्तव्य के आगे झुक जाने के लिए तैयार होती है । 'अक्स', 'विलोम', 'झूलती कुर्सी', 'ग्लेशियर से' आदि कहानियों में नारी के नायिका रूप का चित्रण मृदुला गर्ग ने किया है, जो कहानी के कथानक का नेतृत्व करती हैं ।

- **प्रेमी की तलाश करती नायिका -**

'अक्स' कहानी की नायिका 'मैं' कथानक का नेतृत्व करती है । पूरी कहानी में उसी का चित्रण मिलता है । 'मैं' एक पुरुष से प्रेम करती है, जो युरोप में रहता है, जिसकी आँखें हरी हैं । उसके बारे में वह कहती है - ''वह आम हिंदुस्थानी आदमी से बिलकुल अलग था । उसकी आँखें हरी-भूरी थीं, बाल सुनहले थे, त्वचा का रंग सुनहला गोरा था और वह एक खास अन्दाज में मुस्कराता था ।''[27] उसके अक्स को वह हर आदमी में तलाशती है । बहुत-से लोग उसे विवाह के हेतु देखने आये थे । सज-धजकर वह उनके सामने बैठती थी । लेकिन फिर भी वह विवाह नहीं करती ।

एक बार पेरिस जाकर वह इस खामखयाल जकड़ से आजाद हो जाना चाहती है । उसका प्रेमी अगर उसे पेरिस में नहीं मिला, तो किसी एक अदद दुनियादार आदमी को पकड़कर उसके साथ विवाह कर जिंदगी बसर करना चाहती है । इस दरम्यान दस साल बीत जाते हैं । पैसे जमा करने के बाद वह पेरिस चली जाती है। बहुत से शहरों में उसे वह ढूँढ़ती है, लेकिन वह नहीं मिलता । पेरिस, मिलानो, रोम,

जेनीव, लन्दन, वेनिस आदि शहरो में घूमती है । लेकिन हरी आँखोंवाला आदमी नहीं दीखा । इस तरह पूरी कहानी 'मैं' के ईर्दगिर्द ही घूमती रहती है ।

- **पुरानी यादों में खोयी नायिका -**

'विलोम' कहानी आत्मकथन शैली में लिखी गई है । अत: इसमें नायिका को 'मैं' के रूप में ही चित्रित किया है । 'विलोम' कहानी की 'मैं' एक पुरुष से प्रेम करती है । सोलह साल के बाद जब वह बंबई आती है, तो अपने प्रेमी की और पुरानी यादो में खो जाती है । इन्हीं बातों पर पूरी कहानी आधारित है । 'मैं' कुण्डालिया एण्ड कंपनी में काम करती है । अपनी कंपनी की बिक्री-शाखाओं की कान्फ्रेन्स के लिए बंबई आ जाती है । तो उसे बंबई शहर में बहुत-सा बदलाव दिखाई देता है । रास्ते के नाम बदल चुके हैं । उसके घर तक को वह पहचान नहीं पाती । उसकी पुरानी यादें धुँधली-सी हो गई हैं ।

'मैं' जिस पुरुष से प्रेम करती है, वह बिहार के दुमका जिले के किसी गाँव में रहकर बँधुआ मजदूरों के लिए काम करना चाहता है । 'मैं' को भी वह अपने साथ चलने को कहता है । 'मैं' अपने प्रेमी का साथ देने की हामी तो भरती है, लेकिन उसका साथ नहीं देती । आज वह इतना भी नहीं जानती कि, उसका प्रेमी कहाँ है ? किस हाल में हैं ? आज वह उसे इतना भूल चुकी है, कि वह कहती है - ''इसकी तुलना में बम्बई शहर को न पहचान पाना मामूली बात थी । जिस आदमी के लिए मुझे शहर दीखना बंद हो गया था, आज इतनी कोशिश के बाद उसका चेहरा तक मुझे याद नहीं आता ।''[28] लेकिन बंबई आने के बाद उसके साथ बिताए हर पल को याद करने की कोशिश करती है ।

- **ग्लेशियर की सैर करनेवाली -**

'ग्लेशियर से' कहानी की मिसेज दत्ता प्रमुख नारी पात्र है । पूरी कहानी मिसेज दत्ता यानी उषा भटनागर के ईर्दगिर्द ही घूमती है । मिसेज दत्ता अपने पति के साथ ग्लेशियर की सैर के लिए आ गयी है । कहानी में ग्लेशियर की सैर का ही वर्णन दिखाई देता है । मिस्टर दत्ता को टूरिस्ट बंगले में छोड़ उषा ग्लेशियर की सैर के लिए निकल पड़ती है । तब उसे दस साल पहले की बातें याद आती हैं, जब वह मिसेज दत्ता नहीं उषा भटनागर थीं । इसी यादों में खोयी वह ग्लेशियर तक पहुँच जाती है । लेकिन शाम के छह बजे और यह वक्त ग्लेशियर की सैर का नहीं, तो सैर से वापस आने का समय था। रास्ते में उसे एक गाईड मिलता है, जो घोड़े पर उसे ग्लेशियर की सैर करवाना चाहता है । लेकिन मिसेज दत्ता अपने ही खयालों में चली जाती है । इस पहाड़ी प्रेदश में एक पठान उसे ग्लेशियर की सैर करवाता है । जब वह वापस आती है, तो उसका सारा बदन, हाथ-पैर सुन्न हो गए हैं, जिसे मला जा रहा है । इस तरह पूरी कहानी मिसेज दत्ता के साथ ही चढ़ती है, जो इस कहानी की नायिका है ।

- **असफल प्रेम करनेवाली -**

'झूलती कुर्सी' कहानी में शेफाली प्रमुख नारी पात्र है, जो कहानी की नायिका है । शेफाली इंडियन एयरलाइन्स में नौकरी करती है । वह एक युवक से प्यार करती है और अपनी बाल्कनी में झूलती कूर्सी पर बैठकर उसी का इंतजार करती है । शेफाली की सभी सहेलियों की शादी हो चुकी है । शेफाली भी शादी करना चाहती है ।

शेफाली एक दिन अपने प्रेमी को रैम्बल रेस्तराँ में मिलने बुलाती है । वहाँ बहुतदेर तक वह अपने प्रेमी का इंतजार करती है, लेकिन उसका प्रेमी नहीं आता । दो घण्टे उसका इंतजार करके वह घर वापस आती है । उसके मन में विचार आता है - ''मैंने उससे यह तक नहीं पूछा था, वह बोल कहां से रहा है ? अब मैं उस तक कैसे पहूँचूगी ? उसे कहां ढूँढूगी ? अब वह नहीं मिलेगा ।''[29] उसे लगता है, उसके फोन आयेगा, तब तक उसका फोन आता है । अब शेफाली उसे रेस्तराँ के बजाय अपने घर मिलने बुलाती है । उसके इंतजार में फिर झूलती कुर्सी पद बाल्कनी में बैठती है । शेफाली प्रेम तो करती है, लेकिन उसका प्रेमी उसे नहीं मिलता ।

मृदुला गर्ग ने नायिका के रूप में असफल प्रेमिकाओं का चित्रण अधिकांश कहानियों में किया हैं । नायिका प्रेम तो करती है, लेकिन अंत तक वह अपने प्रेमी का साथ नहीं पा सकती ।

4.1.3 विभिन्न व्यवसायों में नारी रूप -

आज की नारी विभिन्न व्यवसायों में काम करती दिखाई देती है । उसका काम सिर्फ घर की चार दीवारों में कैद होकर बच्चे पैदा करने तक सीमित नहीं रहा है । आधुनिक काल की नारी शिक्षित होने के कारण वह घर में बैठना पसंद नहीं करती । वह कुछ न कुछ कर दिखाना चाहती है, जिससे समाज में उसकी प्रशंसा हो । वह नौकरी कर अपना स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है । वह परिवार की जिम्मेदारियों को अपने कंधे पर लेना चाहती है । घर की समस्या उसे मजबूर करती है कि वह नौकरी करें या व्यवसाय करें । मजबुरन उसे विभिन्न व्यवसायों में परिस्थितियाँ भी ले जाती हैं । घर के बाहर आते ही उसके विभिन्न रूप प्रकट होते हैं । कभी-कभी नारी परिस्थिति के कारण स्वावलंबी जीवन जीने के उद्देश्य से स्वेच्छा से व्यवसाय करती है । मृदुला गर्ग के विवेच्य कहानीसंग्रहों में नारी के ऐसे ही कुछ व्यावसायिक रूपों का चित्रण मिलता है । वह निम्नांकित हैं -

4.1.3.1 सहाय्यक कमिशनर -

मृदुला गर्ग की कहानी 'खरीदार' में संयुक्त सचिव के पद पर कार्य करनेवाली एक ऐसी नारी का रूप उभरता है जो विवाह के बिना अपने मनचाहे प्रेमी को खरीदकर जैविक भूख मिटा सकती है । प्रेम का एक नया कोण लेकर प्रेम एंव सेक्स को बड़ी गहराई एवं सूक्ष्मता से लेखिका ने रूपायित किया है ।

बीस हजार में रिश्ता तय करने पर नीना माँ से स्पष्ट कह देती है, ''मैं शादी नहीं करूँगी ।''[30] स्वयं अविवाहित रहकर नीना दहेज लेने वाले के मुँह पर तमाचा जड़ती है । वह आय.ए.एस. पास करके सहायक कमिशन के रूप में नियुक्त होती है । कुछ ही वर्षों में पदोन्नति होकर वह गृह-मंत्रालय में संयुक्त-सचिव के पद पर पहुँचती है । वह न स्त्री है, न पुरुष, बस मात्र एक कुरसी है । वह विवेकशील है, स्त्री है तो क्या ?

मैसूर में ए.एस.पी. के साथ दूबली-पतली बदसूरत नीना घोड़े पर बैठकर लम्बड़ियों के तांडे पर सबसे पहले पहुँचती है । जीप आगे ले जाकर दंगाइयों को चेतावनी देती है । अचानक एक पत्थर आकर लगने से वह वहीं बेहोश होकर गिर जाती है । वह कट्टर अहिंसावादी है, और स्वयं गोली खाकर भी ए.एस.पी. को गोली चलाने का हुक्म नहीं देती ।

नीना का प्रेमी सुनिल कवि है । लेखिका ने इतनी बदसूरत औरत का प्रेमी एक कवि को बनाकर हमारे बिम्ब को तोड़ा है । सुनिल का साथ नीना के लिए बहुत आरामदेह है । उसमें न कोई तनाव है न दबाव । कविता के साथ बागबानी का शौक भी सुनिल को है, जिसे नीना बहुत पसंद करती है ।

डॉ. घनश्याम भुतड़ा इस कहानी की आलोचना करते हुए लिखते हैं, ''आज नीना के पास गाडी है, बंगला है, नौकर-चाकर हैं और जो नहीं है, उसे वह कभी भी पा सकती है । वह सुनिल को जब चाहे तब अपने पास बुलाकर रख सकती है । पहले जैसा मामला यहाँ नहीं है कि बीस-तीस हजार में दूल्हा खरीदो और जीवन भर उसकी चाकरी करते रहो । अपने कर्तव्य से वह संयुक्त-सचिव बनी है और जब चाहे तब दूल्हे खरीद सकती है ।''[31]

आधुनिक युग में पढ़ी-लिखी कामकाजी नारी ने बता दिया है कि वह पुरुषों से किसी बात में कम नहीं है ।

4.1.3.2 अनुसंधाता नारी -

मृदुला गर्ग के 'शहर के नाम' कहानी संग्रह की कहानी 'करार' में एक ऐसी नारी का चित्रण किया है, जो अमरिकन है और वह यूनीसेफ की तरफ से पारम्पारिक जल-संचय व्यवस्था पर प्रोजेक्ट कर रही थी और उसी सिलसिले में हिंदुस्थान आयी थी । रेगिस्तान के पर्यावरण और पानी की खेती पर जोधपुर में एक सेमिनार था, वहाँ पर चैरी आयी थी ।

असल में चैरी अमरिकन नहीं, तो चीनी थी । लेकिन उसके दादा चीन से भागकर अमरिका आये थे और वहाँ के नागरिक बन गये थे । स्वयं वह चीन कभी नहीं गयी थी और हिंदुस्थान पहली बार आयी थी । चैरी ने भारत के गाँवों के बारे में काफी रूमानी बातें सुन रखी थी । साथ ही अनुसंधाता होने के कारण उसके मन में एक जिज्ञासा भारतीय गाँवों के बारे में निर्माण हुई थी । उसका खयाल था, किसी भी

गाँव में बिना सूचना पहुँचा जा सकता है, गाँववाले आदर-सत्कार अवश्य करेंगे । वह यत्र-तत्र गाँवों में जाकर उनकी 'पानी की खेती' देखना चाहती थी ।

चैरी रेगिस्तान के एक गाँव में पहुँच जाती है । लेकिन ना ही वह वहाँ के कुएँ का पानी पीती है, ना ही वहाँ पर मंदिर का प्रसाद लेने के लिए रुकी रहती है । जो लोग चैरी को गाँव ले आये थे, वह अकाल-राहत के नाम पर बन रहे तालों की मिट्टी खोदकर लौट रहे थे । रेत से उनके कपड़े, चेहरे और सिर के बाल यूँ सराबोर थे । यह देखकर उसके मन में एक अजीब हिचकिचाहट पैदा होती है । लेकिन वहाँ के पेड़-पौधे, रेगिस्तान का माहौल देखकर उसे अमरीका वापस जाने का मन नहीं होता । अंत में वह चाहती है, कि हिंदुस्थान में ही रहे ।

चैरी अनुसंधाता होने के कारण उसके मन में भारत के गाँव, यहाँ की खेती, यहाँ के लोग, लोगों का अतिथि-सत्कार आदि बातों को जानने की जिज्ञासा थी, जिसे वह अंत में पूरी करती है ।

4.1.3.3 नौकरानी -

'अनाड़ी' कहानी में एक ऐसी लड़की का चित्रण किया है, जो अपने पिता का काम छूट जाने पर अपनी माँ को मदद करने के हेतु पढ़ाई छोड़ नौकरानी का काम करती है ।

सुवर्णा बारह साल की छोटी लड़की है । जब वह आठ साल की थी, तब से वह अपनी माँ के साथ बर्तन मलने का काम कर रही है । जिस बाई के घर वह काम करती थी, उसका पति पहले दिन सुवर्णा को देखकर हमदर्दी जता रहा था। सुवर्णा होशियार है, इसलिए इन सेठ लोगों की झूठी हमदर्दी या बेचारी कहना उसे अच्छा नहीं लगता । उस सेठ का बेचारी कहना सुनकर उसे लगता है, "इतना तरस आ रहा है तो भेज दो ना इस्कूल । करवा दो उसकी पढ़ाई-लिखाई का इन्तजाम । ना, वो इनके बस का नईं । फिर कौन करेगा झाड़ू-फटका, कौन मलेगा भाँड़े ।"[32]

सुवर्णा को लाली-पाऊडर लगाना बहुत अच्छा लगता है, साथ ही नाखून रंगना, कभी लाल, गुलाबी, कभी नारंगी । लेकिन भाँडे मलने से वह बहुत दिन नहीं रहता । भाई से एक बार रंग की बाटली सुवर्णा ने माँगी थी, लेकिन माँ ने उसकी पिटाई की थी । एक बार अपनी बाई को नाखून रंगते देखकर सुवर्णा उससे उसकी माँग करती है । तब बाई उसका हाथ पकड़कर एक ही ब्रश में सारे नाखून रंग देती थी ।

सुवर्णा का मन होता है कि इतवार को वह भी काम से छुट्टी ले । लेकिन मालकिन पहले ही दिन कहती है, इतवार को छुट्टी नहीं लेना, सेठ घर पर होते हैं । एक बार उसने इतवार को छुट्टी ली थी । घर से निकली, लेकिन काम पर नहीं गयी । उस दिन उसकी माँ ने खूब पिटायी की थी । एक बार सुवर्णा अपने बाई के घर में बिस्कुट खाते हुए टाँग-फैलाकर सोफे पर बैठ जाती है । यह देखकर उसके बाई को

बहुत गुस्सा आजाता है, और खींचकर उसे सोफे से उठाकर घसीटती हुई बाहर ले जाती है और उसे काम से निकालती है ।

4.1.3.4 हार्ट स्पेशालिस्ट / डाक्टर -

'चकरधिन्नी ' कहानी की लेखा एक हृदय रोग विशेषज्ञ (हार्ट स्पेशालिस्ट) है । पति भी डॉक्टर थे, बच्चों के डाक्टर । उसे विनीता नामक एक बेटी । लेखा अपने पति को विदूषक कहती थी । लेखा के पति विनीता को साहबजादे कहकर पुकारते थे, तब लेखा माथे पर बल डालकर कहती थी, ''वह लड़की है और मुझे उसके लड़की होने पर गर्व है ।''[33]

लेखा दिल्ली शहर के नामी, पंत अस्पताल में चीफ की ड्यूटी निभाती थी । अपने काम के कारण वह अपनी बेटी को समय नहीं दे पाती थी । पहले ही महीने में अस्पताल में एक बेढ़ब केस आ निकला था और लेखा उसे आया के हवाले कर, पूरे चौबीस घण्टों को गायब हो गयी थी । लौटने पर उसने अपना दूध सुखा दिया था । वे अपने मरीजों का नुकसान नहीं कर सकती थी । लेखा चाहती है कि विनीता को वह अपनी तरह हार्ट स्पेशालिस्ट बनाए । विनीता जब आठ बरस की होती है, तब लेखा को यह चिंता सताने लगी थी, कि दूसरा बच्चा न होने पर पति के बाद क्लिनिक का क्या होगा ? इसलिए वह और एक बच्चा पैदा करना चाहती है । लेकिन उसके पति उससे कहते हैं, ''भई, मैं सकता तो जरूर करता पर तुम नहीं । तुम्हारे मरीज हमेशा कूच की हड़बड़ी में रहते हैं । कहीं बीच डिलीवरी किसी का बुलावा आ गया तो बच्चा बेचारा अधर में लटका रहेगा ।''[34]

जब लेखा रिटायर हो जाती है, तो अपने पति के साथ घर पर रहती है । रिटायर होने के बाद भी वह हफ्ते में छह-सात घण्टे मेडिकल कॉलेज में पढ़ाने का काम करती है, और बाकी वक्त प्राइवेट प्रैक्टीस करती है ।

4.1.3.5 लेक्चरर -

'वह मैं ही थी' कहानी की नायिका उमा शादी से पहले कॉलेज में अर्थशास्त्र पढ़ाती थीं । उमा के माता-पिता दिल्ली में रहते थे । उसकी और दो छोटी बहनें थीं । लेक्चरर के रूप में जो भी पैसा कमाया, साथ-साथ खर्च करती रही, तब आर्थिक स्वतंत्रता विलास की वस्तु थी । उससे जो बचाया, अपनी शादी में लगा दिया, थोड़ा बहुत फिर भी जो बचा रहा, शादी के बाद मौज-मजे में होम कर दिया ।

कॉलेज में जब उमा लेक्चरर के रूप में काम करती थी, तब उसकी हेड ने एक बार कहा था, ''विवाह करते हुए जिस बात का ख्याल रखना चाहिए, वह है स्थानमूलक तृष्टिगुण, यानी प्लेस युटिलिटी ।''[35] लेकिन यह बात उमा की समझ में शादी के बाद आती है । उमा मनीश से शादी करती है, जो एक कारखाने में काम करता है । शादी के बाद उमा नौकरी छोड़ देती है । शादी के कुछ दिनों के

बाद मनीश का तबादला एक छोटे से कस्बे में होता है, और उस वक्त उमा गर्भवती थी । लेकिन उस कस्बे में न अस्पताल था, न एक्स-रे-मशीन, और न डॉक्टर ।

इस तरह एक पढ़ी लिखी, नौकरी करनेवाली लड़की होकर भी वह मनीश जैसे मध्यवर्गीय लड़के के साथ शादी करती है, और एक छोटे से कस्बे में वह एक छोटे से कमरे में रहती है । लेकिन पति का साथ नहीं छोड़ती ।

4.1.3.6 चित्रकार -

'संगत' कहानी आत्मकथन शैली में लिखी है । इसमें नायिका को 'वह' कहकर संबोधित किया है । 'वह' एक चित्रकार है, और एक पुरुष चित्रकार उसकी कला से प्रेम करता है । वह पुरुष उसके पति की गैरहाजिरी में, उसके घर जाता है । लेकिन उसकी नजर में वह पुरुष सिर्फ चित्रकार है । वह उसे बुलाती है तो अपना कोई चित्र दिखलाने के लिए । या फिर उसके बहुत इसरार पर उसका चित्र देखने चली आती है । देखकर कहती है, ''आपके चित्रों पर भला मैं क्या राय दे सकती हूँ । आप इतने बड़े चित्रकार हैं, मैं तो बस मुग्ध रह जाती हूँ या फिर कभी-कभी थोड़ी-सी ईर्ष्या होती है . . . काश, मैं भी ऐसे चित्र बना सकती !''[36]

इस तरह दोनों भी चित्रकार थे । वह पुरुष उसके सौंदर्य पर मोहित था, लेकिन उसने तो पुरुष समझकर कभी उसकी तरफ आँख उठाकर देखा तक नहीं ।

4.1.3.7 दाई -

'तीन किलो की छोरी' कहानी में शारदाबेन गाँव में दाई का काम करती थी । लेकिन शारदाबेन दाई नहीं, अपने को ग्रामसेविका कहलाना पसंद करती थी । महीना सौ रुपये की नौकरी थी उसकी । बच्चा जनवाने पर, उसे नहलाकर माँ को उसका मुँह दिखलाने के पहले वह तराजू पर उसका तौल करने दौड़ती थी । शारदाबेन का हिसाब कच्चा नहीं था । तभी तमाम ग्रामसेविकाओं में अव्वल ठहरायी जाती थी, हमेशा ।

शारदाबेन वनकर जाति की थी । बनकरों का दुःख-दर्द वहीं दूर करती थी । इसलिए तो लेखिका कहती है, ''यही उनकी डॉक्टर है, वही अस्पताल । सेण्टर में जो बुखार-दरद की दवा रहती है, उसी के भरोसे इलाज चलता है उनकी हारी-बीमारी का । कितनी इज्जत देते है शारदाबेन को जैसे उनमें से एक न होकर ऊँची जात की हो ।''[37] उसके जाति के लोग उसे इज्जत देते ही थे । लेकिन गाँव के ऊँची जाति के लोग भी उसे इज्जत देते थे, उससे अपनी हारी-बीमारी में इलाज करवा लेते थे । इस तरह एक दाई के रूप में शारदाबेन को गाँव में बहुत मान-सम्मान मिलता था ।

निष्कर्ष -

नारी संतान को जन्म देकर परवरिश करती है । परिवार में नारी का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है । नारी से परिवार बनता भी है और बिगड़ता भी है । वह शिक्षित हो या अशिक्षित अपने परिवार को आदर्श बनाने में अपना जीवन समर्पित करती है । वह अपने विविध रूपों में परिवार में या पुरुष के जीवन में तन-मन से सहायता करती आयी है । परिवार के साथ ही समाज में भी वह महत्त्वपूर्ण स्थान निर्माण कर चुकी है ।

अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए उसे अनेक रूपों से गुजरना पड़ता है । माता, पत्नी, प्रेमिका, बेटी, बहन, सास, बहू आदि उसके अनेकानेक, पारिवारिक रूप हैं । मृदुला गर्ग ने इन्हीं पारिवारिक रूपों को अपनी कहानियों में चित्रित किया है ।

नारी के विभिन्न पारिवारिक रूपों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और गौरवाशाली रूप माता का है । इस माता-रूप का चित्र का चित्रण मृदुला गर्ग ने अपनी अधिकांश कहानियों में किया है । 'तीन किलो की छोरी' कहानी में माँ के दो रूपों का चित्रण मिलता है । लल्लीबेन एक विवश माँ है, जो तीसरी बार भी बेटी होने के कारण अपने नसीब को कोस रही है । इसी कहानी में और एक माँ का चित्रण किया है, जो आर्थिक परिस्थिति के कारण खुद को बेबस पाती है । उसने एक बेटे को जन्म दिया था, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण बिना दूध के बच्चा बीमार होकर मर जाता है ।

'चकरघिन्नी ' कहानी की माँ लेखा अपनी बेटी विनीता के भविष्य को लेकर चिंतित है । इसी कहनी में विनीता को भी आगे एक माँ के रूप में चित्रित किया है । वह एक आदर्श माँ बनने की कोशिश करती है, लेकिन उसमें असफल हो जाती है ।

'खरीदार' कहानी में नीना की माँ उसकी शादी को लेकर चिंतित है । इसलिए बीस हजार रूपये दहेज देकर भी वह अपने बेटी की शादी के लिए तैयार हो जाती है । इस तरह मृदुला गर्ग ने अपनी कहानियों में माँ के विविध रूपों को चित्रित किया हैं ।

परिवार में नारी का पत्नी रूप भी विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है । नारी अपने पति के सुख-दुःख, आशा-निराशा, आचार-विचार और महत्वकांक्षाओं को अपना कर ही सहचारि बनती है । इस पत्नी रूप का चित्रण मृदुला गर्ग ने अपनी कहानियों में किया है । 'चकरघिन्नी ' कहानी की विनीता एक सफल आदर्श पत्नी है, 'वह मैं ही थी' कहानी की उमा अपने पति के लिए त्याग करनेवाली पत्नी है, 'रेशम' कहानी की हेमवती अपने बहू-बेटों के सामने हमेशा अपमानित होती है । 'तुक' कहानी की मीरा पति के पसंद के अनुरूप खुद को बदलती हैं । 'अदृश्य' कहानी की वीना पति के प्रेम से वंचित पत्नी है । तो 'खाली' कहानी की पत्नी आधुनिक विचारोंवाली है ।

नारी के सभी रूपों में बेटी रूप बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है । 'अनाडी' कहानी की सुवर्णा माँ को मदद करनेवाली बेटी के रूप में चित्रित की है, तो 'चकरघिन्नी ' कहानी की विनीता माँ के प्रति विद्रोह करती है । 'शहर के नाम' कहानी की 'मैं' पिता के इच्छा के खिलाफ विद्रोह करती है ।

जब लड़की की शादी हो जाती है, तो उसे बहुत-सी जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं । 'बाहरीजन' की नंदिनी और 'रेशम' की तारा और प्रीति का बहू के रूप में चित्रण किया है । उसके ही साथ इन्हीं दो कहानियों में सास-रूप का चित्रण भी मृदुला गर्ग ने किया है । 'अक्स', 'विलोम', 'झूलती कुर्सी', 'ग्लेशियर से' आदि कहानियों में नारी के नायिका रूप का चित्रण किया है, जो कहानी के कथानक का नेतृत्व करती है ।

मृदुला गर्ग ने विभिन्न व्यवसायों में भी नारी का चित्रण किया है । 'खरीदार' कहानी की नीना एक संयुक्त सचिव के पद पर काम करती है तो 'करार' में एक अनुसंधाता के रूप में काम करती है । 'चकरघिन्नी ' कहानी की लेखा एक हार्ट स्पेशालिस्ट के रूप में काम करती है । 'अनाडी' कहानी की सुवर्णा एक नौकरानी के रूप में काम करती है । 'संगत' कहानी की चित्रकार तथा 'तीन किलो की छोरी' में दाई के रूप में काम करती है । इस तरह मृदुला गर्ग ने नारी के पारिवारिक तथा व्यावसायिक रूपों का चित्रण अपनी कहानियों में किया हैं ।

संदर्भ सूची

1. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ, पृ. 14
2. वही, पृ. 18
3. वही, पृ. 96
4. बिंदु अग्रवाल, हिंदी उपन्यासों में नारी चित्रण, पृ. 294
5. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 22
6. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 25
7. वही, पृ. 51
8. वही, पृ. 57
9. मृदुला गर्ग, ग्लेशियर से, पृ. 83
10. डॉ. वल्लभदास तिवारी, हिंदी काव्य में नारी, पृ. 131
11. डॉ. मठपाल सावित्रि, जैनेंद्र के उपन्यासों में नारी पात्र, पृ. 22
12. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 57
13. वही, पृ. 69
14. वही, पृ. 78
15. मृदुला गर्ग, ग्लेशियर से, पृ. 51
16. वही, पृ. 152
17. वही, पृ. 137
18. वही, पृ. 137
19. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 45
20. वही, पृ. 53
21. वही, पृ. 101
22. वही, पृ. 65
23. वही, पृ. 80
24. वही, पृ. 64
25. मृदुला गर्ग, ग्लेशियर से, पृ. 68
26. वही, पृ. 156

27. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 37
28. वही, पृ. 93
29. मृदुला गर्ग, ग्लेशियर से, पृ. 34
30. वही, पृ. 83
31. डॉ. घनश्याम भुतडा, समकालीन हिंदी कहानियों में नारी, पृ. 130
32. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 46
33. वही, पृ. 50
34. वही, पृ. 51
35. वही, पृ. 67
36. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 87
37. वही, पृ. 26